दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR
ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
1857 की क्रांति
LIVE
04-07-2024 04:00 P

L-1

# 1857 की क्रान्ति

**क्रान्ति –**

⇒ व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन करना।
⇒ क्रान्ति एक लम्बे संघर्ष का परिणाम होती है।

**कारण –**

① राजनीतिक कारण
② धार्मिक कारक
③ सामाजिक कारक
④ तात्कालिक कारक
⑤ आर्थिक कारक

L-2

**1857 की क्रान्ति –**

① **सामाजिक – धार्मिक कारक –** धर्मान्तरण को बढ़ावा दे रहा था।

1. ⇒ धार्मिक अयोग्यता अधिनियम – यदि कोई भी व्यक्ति धर्मान्तरण करता है, तो उसकी पैतृक सम्पत्ति में उसका अधिकार बना रहेगा।
2. ⇒ सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम – भारतीय सैनिकों को युद्ध करने के लिये देश से बाहर भेजा जाता था, जबकि समुद्र पार जाना भारतीयों में निषिद्ध था।
3. ⇒ सती प्रथा निषेध (1829) – विलियम बेंटिक द्वारा यह पास किया गया। अधिनियम 17 में यह प्रावधान था।
   यह एक प्रगतिशील कदम था, परन्तु अंग्रेजों को भारतीय मामलों में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं।

विलियम बैंटिक 1829 अधि.17

4. ⇒ विधवा पुनर्विवाह अधिनियम – 1856.
5. ⇒ 1813 के चार्टर एक्ट से ईसाई धर्म प्रचारकों का भारत आगमन।
6. ⇒ सैनिकों को धार्मिक चिन्हों के प्रयोग की मनाही।

② **आर्थिक कारक –**

⇒ 1757 के प्लासी के युद्ध से अंग्रेज व्यापारिक शक्ति से राजनीतिक शक्ति के रूप में रूपांतरित हुए।
⇒ 1764 के बक्सर के युद्ध में अंग्रेज विजयी हुये। 1765 की इलाहाबाद की संधि से अंग्रेजों ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी के अधिकार अपने पास ले लिया।

# 1765 = इलाहाबाद की संधि

## बंगाल में द्वैध शासन

### प्रशासन

- सामान्य प्रशासन
  - बंगाल के नवाब
  - 1765–1772
  - वारेन हेस्टिंग्स खत्म
- राजस्व (Revenue)
  - बंगाल = मुहम्मद रजा खां
  - बिहार = राजा सिताबराय
  - उड़ीसा = रायदुर्लभ

# इलाहाबाद की संधि

| 12 अगस्त 1765 | 16 अगस्त 1765 |
| --- | --- |
| क्लाइव + शाहआलम II | क्लाइव + शुजाउद्दौला |
| शाहआलम II अंग्रेजों का पेंशनर बनकर रह गया। 26 लाख रु. वार्षिक पेंशन | युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में 50 लाख रु. का जुर्माना लगा दिया गया। |

आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर कुशासन

⇒ 1765 से 1772 तक बंगाल में द्वैध शासन रहा।
⇒ धन निकासी सिद्धान्त – दादा भाई नौरोजी।
⇒ इस सिद्धान्त में सबसे प्रमुख 'होम चार्जेज' था।
⇒ 1773 के रेग्यूलेटिंग Act से निजी व्यापार पर रोक लगाया गया।

③ सैन्य कारक –
⇒ भारतीय सैनिकों के साथ भेदभाव, यह उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाता था
i) आखाद्य भोजन
ii) पोस्टल सेवा पहले निःशुल्क थी, अब उस पर चार्ज लगा दिया गया।
iii) भारतीय सैनिकों का उच्च रैंक तक ना जा पाना।
iv) समान रैंक के अधिकारी / कर्मचारी के वेतन अलग-अलग थे।

④ राजनीतिक कारक –
⇒ अंग्रेजों की साम्राज्यवाद नीति।
⇒ नाना साहेब (धुन्धूपंत) की पेंशन रोक दी गयी।
⇒ दत्तक पुत्र वैध उत्तराधिकारी नहीं माना जायेगा। इससे रानी लक्ष्मी बाई प्रभावित थी।
⇒ अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर ब्रिटिश साम्राज्य में विलय करने की कोशिश की गयी।
⇒ वेलेजली की सहायक संधि – HMT (हैदराबाद, मराठा, तन्जौर)
यह संधि सम्राज्यवाद को सीधे तौर पर बढ़ावा दे रही थी।
⇒ डलहौजी की हड़प नीति – जयपुर, सतारा, संभलपुर, उदयपुर, बालाकोट, नागपुर का विलय करना स्वीकार किया गया।
⇒ अंग्रेजों की इन शोषणकारी नितियों से किसान, छोटा जमीनदार, व्यापारी ये सब असंतुष्ट थे।

⑤ तात्कालिक कारक –
⇒ ब्राउनबेस राइफल के स्थान पर इन्फील्ड राइफल आयी।
⇒ अफवाह यह थी कि गाय / सुअर की चर्बी है।
⇒ इस राइफल में चर्बी वाले कारतूस लगते थे, इन्हें दांत से छीलना पड़ता था।
⇒ इसने सैनिकों के भीतर के असंतोष को next level पर पहुँचा दिया।

Divijay Sir

घटनाक्रम – 29 मार्च 1857 में बैरकपुर छावनी के सैनिक मंगल पांडे हैं; जो 34वीं नैटिवइन्फैन्ट्री (पैदल सेना) के सैनिक हैं।

⇒ मंगल पांडे ने दो अंग्रेज अधिकारियों पर गोली चला दी, जिसमें ह्यूर्से की मृत्यु हो गयी। (29 मार्च)

⇒ 8 अप्रैल को मंगल पांडे को फांसी दी गयी।

तिथि निर्धारित – 31 मई

प्रतीक चिह्न – रोटी और कमल।

10 मई – मेरठ छावनी के सैनिकों ने दिल्ली-बहादुरशाह को विद्रोह का नेता घोषित किया, परन्तु वास्तविक नेतृत्व बख्त खां कर रहे थे।

| | क्षेत्र | नेतृत्वकर्ता |
|---|---|---|
| 1) | दिल्ली | बहादुरशाह द्वितीय, बख्त खां (वास्तविक नेतृत्वकर्ता) |
| 2) | कानपुर | नाना साहेब (धुंधूपंत) + तात्या टोपे (रामचन्द्र पांडुरंग) |
| 3) | झांसी | रानी लक्ष्मीबाई (मणिकर्णिका) |
| 4) | अवध | बेगम हजरत महल (महकपरी) |
| 5) | फैजाबाद | मौलवी अहमदुल्ला |
| 6) | आरा / जगदीशपुर | बाबू कुंवर सिंह |
| 7) | मथुरा | चौधरी देवी सिंह |
| 8) | असम | मणि रामदत्त |

नाना साहेब (धुंधूपन्त)
तात्या टोपे (रामचन्द्र पाण्डुरंग)

बिर्जीस कादिर के नाम से विद्रोह का नेतृत्व कर रहीं

Digvijay Sir GS

# कांग्रेस (1885)

**कांग्रेस से पूर्व राजनीतिक संगठन**

1. क्षेत्रीय संगठन हैं
2. वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं

**कांग्रेस एवं बाद के संगठन**

अखिल भारतीय संगठन
वह सभी वर्गों के हितों की बात करते हैं

# कांग्रेस से पूर्व राजनीतिक संगठन एवं कांग्रेस

## भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व राजनीतिक संस्थाएँ :-

1) वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व करती थी।
2) बहुवर्गीयता का अभाव।
3) इनमें क्षेत्रीय तत्वों को प्रधानता दी गयी थी।
4) इनकी मांगे सीमित थी।

① लैण्ड होल्डर सोसाइटी :- (Land Holder society)

इसको आधुनिक भारत की प्रथम राजनीतिक संस्था माना जाता है।
स्थापना - 1838 (कलकत्ता)
संस्थापक - द्वारका नाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार ठाकुर, राधा कान्तदेव।

Note - बंगहित प्रकाशिनी संस्था (1837) - संस्थापक = द्वारका नाथ टैगोर।

② बंगाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन :- (BBIA)

स्थापना - 20 अप्रैल 1843 (कलकत्ता)
अध्यक्ष - जॉर्ज थॉमसन (अंग्रेज)
सचिव - प्यारे चन्द्र मित्र (भारतीय)
मुख्य उद्देश्य - अंग्रेजों के अधीन भारत के लोगो की वास्तविक दशा के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

merger (LHS + BBIA) → (BIA)

③ ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन :- (BIA)

स्थापना - 28 अक्टूबर 1851 (कलकत्ता)
संस्थापक सदस्य - राजेन्द्र लाल मित्र और राधा कान्त देव, हरिश्चन्द्र मुखर्जी।
उद्देश्य - भारतीयों के हितों की मांग करना अंग्रेजों से।
ये लैण्ड होल्डर सोसाइटी + बंगाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन को मिलाकर बनी।

④ ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन :-

संस्थापक - दादा भाई नौरोजी
स्थापना - 1866 (लंदन)
उद्देश्य - तत्कालीन भारतीय समस्याओं पर विचार करना एवं ब्रिटिश जनमत को प्रभावित करना।

⑤ इण्डियन एसोसिएसन :-

स्थापना – 26 जुलाई 1876 (कलकत्ता)
संस्थापक – सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस।
उद्देश्य – सिविल सेवा प्रणाली में सुधार करना एवं अधिक से अधिक भारतीयों को प्रतिनिधित्व प्रदान करना।

⑥ इण्डियन लीग / टेम्पुल लीग :-

स्थापना – 1875 (कलकत्ता)
संस्थापक – शिशिर कुमार घोष
उद्देश्य – लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करना एवं राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना।

⑦ पूना सार्वजनिक सभा :-

'महाराष्ट्र का सुकरात'

स्थापना – 2 अप्रैल 1870 (पूना)
संस्थापक – महादेव गोविन्द रानाडे।
उद्देश्य – लोगों में राजनीतिक चेतना को जगाना एवं जनता व सरकार के मध्य मध्यस्थता करना।

M G रानाडे 1870
G K गोखले
M G गांधी

⑧ मद्रास महाजन सभा :-

स्थापना – 16 मई 1884 (मद्रास)
संस्थापक – वी राघवाचारी, एस सुब्रहमण्यम, पी॰ आनन्द चार्लू।
उद्देश्य – स्थानीय संगठन एवं संस्थाओं के कार्मों को संगठित करना।

⑨ बाम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएसन :- (BPA)

स्थापना – 1885 (बम्बई)
संस्थापक सदस्य – फिरोज शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयब जी, के॰ टी॰ तेलंग।
उद्देश्य – भारत में सिविल सेवा को आयोजित कराने के लिए। सरकारी पदों पर भारतीयों की नियुक्ति।

# इण्डियन एसोसिएसन :-

संस्थापक – एस एन बनर्जी
सचिव – आनंदमोहन बोस।

⇒ 1883 में कलकत्ता में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजित किया जाता है। यह 'नेशनल कांफ्रेंस' का पहला सम्मेलन था।

⇒ इस सम्मेलन की अध्यक्षता राम तनु लाहणी ने की है।
⇒ मुख्य उद्देश्य – राष्ट्रवादी शक्तियों को एकजुट करना।
⇒ 1885 में इसका दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। बम्बई में इसी समय कांग्रेस का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया जा रहा था, इसी कारण एस. एन. बनर्जी कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में भाग नहीं ले सके।

## कांग्रेस की स्थापना

⇒ स्थापना – 1885
⇒ संस्थापक – ए ओ ह्यूम (एलन ओक्टेवियन ह्यूम) - कृषि विभाग में सचिव के पद पर थे।
⇒ कांग्रेस की स्थापना के समय वायसराय या गवर्नर जनरल लार्ड डफरिन था।
⇒ 1884 में ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय संघ की स्थापना की और यहीं आगे चलकर कांग्रेस की अग्रदूत बनी।

① प्रथम अधिवेशन – (1885 – बम्बई)
⇒ बम्बई के तेजपाल गोकुलदास संस्कृत विद्यालय में हुआ।
⇒ अध्यक्षता – WC बनर्जी (व्योमकेश चन्द्र बनर्जी)
⇒ इस अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
⇒ यह अधिवेशन पूना में होना था, परन्तु वहां प्लेग फैला होने के कारण इसे बम्बई में आयोजित किया गया।
⇒ दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम बदलकर 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' कर दिया गया।
प्रमुख प्रतिनिधि – फिरोज शाह मेहता, दादा भाई नौरोजी, दिनशावाचा, बी. राघावाचारी, एस. सुब्रह्मण्यम।

दादाभाई नौरोजी
INU
↓
INC बनी

② दूसरा अधिवेशन – (1886 – कलकत्ता)
अध्यक्ष – दादा भाई नौरोजी
⇒ इस सम्मेलन में एस. एन. बनर्जी ने भाग लिया एवं नेशनल कांफ्रेस का विलय इण्डियन नेशनल कांग्रेस में कर दिया।

③ तीसरा अधिवेशन (1887 – मद्रास)
अध्यक्षता – बदरूद्दीन तैयब जी।
⇒ यह प्रथम मुस्लिम बने जिन्होंने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की।

Digiwaysir

④ चौथा अधिवेशन - (1888 - प्रयागराज)

अध्यक्षता - जॉर्ज यूल

⇒ ये कांग्रेस की स्थापना करने वाले प्रथम अंग्रेज थे।

सुरक्षा कपाट सिद्धान्त (safety valve)

⇒ लाला लाजपत राय ने दिया था।

⇒ यह सिद्धान्त पहली बार 'यंग इंडिया' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ।

अंग्रेजों ने जान बूझकर कांग्रेस की स्थापना कराई थी जिससे कि भारतीय असंतोष से बचा जा सके।

Digvijay Sir